देशबंधु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा
आन्तरिक गुणवत्ता एवं आश्वासान प्रकोष्ठ,
भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र एवं इन्द्रप्रस्थ अध्ययन केन्द्र
के संयुक्त तत्त्वावधान में

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

“पुण्यश्लोका अहिल्याबाई होल्कर : राजमाता से लोकमाता तक की यात्रा”

दिनांक: 25 फरवरी, 2025

आयोजन स्थल - देशबंधु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

संगोष्ठी की संकल्पना

इस संगोष्ठी के माध्यम से भारत की श्रेष्ठ सम्मानित रानियों में से एक राष्ट्र ऋषिका लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर जी (1725-1795) के जीवन तथा उनके नेतृत्व एवं कर्तृत्व सहित आपके लोक कल्याणकारी राज्य तथा प्रशासन के विषय में मूल्याङ्कन तथा विश्लेषण करना है । लोकमाता के शासन का प्रभाव मात्र मालवा साम्राज्य तक ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र में प्रभावी था। आपकी करुणा, मुदिता, दया, क्षमा, सहनशीलता तथा प्रशासनिक कौशल सहित सांस्कृतिक संरक्षण व संवर्धन के प्रयास अनूठे हैं । लोकमाता के लोक कल्याणकारी राज्य का आदर्श आध्यात्मिक ज्ञान, धर्मराज्य तथा प्रबुद्ध शासन यह महिला सशक्तिकरण जैसे अनेकों ऐतिहासिक उदाहरणों को प्रस्तुत करता है। लोकमाता अहिल्याबाई का जीवन अनेकों चुनौतियों से भरा था, उन सबसे पार जाकर अपने समय की लोकप्रिय शासिका बनीं तथा समाज में सभी प्रकार के सनातन आदर्शों की स्थापना की। अतः लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर भारतीय समाज के लिये एक अनुमप आदर्श हैं । इस संगोष्ठी के माध्यम से लोकमाता के जीवन से सम्पृक्त अनेकों विषयों का ज्ञान हम सभी को प्राप्त हो सकेगा ।

ऐतिहासिक व सांस्कृतिक सन्दर्भ

•हम भारतवासी सौभाग्यशाली हैं कि हमारी प्रवाहमयी उज्ज्वल परंपरा तथा इतिहास है । हमारे पास राष्ट्र तथा विश्व कल्याण हेतु अनेकों ऋषि-मुनियों का चिंतन है। इसी परम्परा की एक राष्ट्र ऋषिका जिसे हम 'मातोश्री' के नाम से भी जानते हैं। ऐसी राष्ट्र और धर्म के लिए समर्पित भारतीय संस्कृति और वीरता की प्रतीक लोक माता देवी अहिल्याबाई होल्कर सशक्त भारतीय नारी पर्याय स्वरूप हैं ।

•माता अहिल्याबाई होल्कर अपने पति खंडेराव होल्कर और बाद में अपने श्वसुर मल्हार राव होल्कर की मृत्यु के बाद 1767 से 1795 तक मालवा साम्राज्य पर सफलशासन किया । यह ऐसा काल खण्ड था जब महिला नेतृत्व दुर्लभ ही प्राप्त था उसका लखण्ड में भी अहिल्याबाईने न केवल शासन किया अपितु अनेकों सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी तथा उनमें परिवर्तन लाकर समाज को सार्थक दिशा भी प्रदान की । इस प्रकार से अनेकों सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राजनैतिक सुधारोंको अंगीकृत कराकर राष्ट्र के सनातन मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा करके भारतीय इतिहास में सबसे सम्मानित शासकों में से एक बन गईं ।

•१८वीं शताब्दी में जब सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में राजनीतिक अस्थिरता थी तथा चहुंओर विविध प्रकार के आक्रान्ताओं के साम्राज्यवादी संघर्ष बढ़ रहे थे । उस समय में अहिल्याबाई होलकर की दूरदर्शी शासन व्यवस्था ने शांतिपूर्ण तथा लोक कल्याणकारी प्रशासन की एक दृढ़ नींव स्थापित की । उस नींव पर अविचल स्थापित धर्म संस्कृति, कला-कौशल, अध्यात्म, तीर्थ तथा मठ-मन्दिर आज भी देदीप्यमान हैं । इस प्रकार उनके शासन को विकेंद्रीकृत, सर्वसमावेशी तथा आर्थिक-धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक सुधार को प्राथमिकता देने वाला माना जाता है । उनके व्यक्तित्व को यह सूक्ति और अधिक स्पष्ट करती है "क्षमा बलमशक्तानां, शक्तनाम् भूषणं क्षमा" इस प्रकार Queen of Temples तथा The philosopher Queen कही जाने वाली माता अहिल्याबाई जी का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का दिव्य पुञ्ज है

ऐतिहासिक व सांस्कृतिक सन्दर्भ

•मातोश्री अहिल्याबाई होल्कर के जन्म को 300 वर्ष बीत चुके हैं इस वर्ष उनका त्रि-शताब्दी जयंती वर्ष मनाया जा रहा है । समसामयिक समय में इस संगोष्ठी का उद्देश्य आज से 300 वर्ष पूर्व जिस महिला शासक के रूप में अहिल्याबाई ने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा लैंगिक समस्याओं का निराकरण करते हुए आगे बढ़ते जाने का मार्ग तैयार किया था वह मार्ग क्या था? जिसे आज समझने की अत्यंत आवश्यकता है । अहिल्याबाई द्वारा निर्मित मार्ग वह किसी क्षेत्र विशेष के लिये नहीं था । इसीलिए उन्होंने अपने कार्य का केंद्र सम्पूर्ण देश को ध्यान में रखकर बनाया । उनके शासन-प्रशासन के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनका ध्यान मात्र अपने राज्य प्रशासन या सैन्य विषयों तक ही सीमित नहीं था अपितु वह सम्पूर्ण राष्ट्र को केन्द्र में रखकर एक कुशल शासक की तरह अपने सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करती थी। अहिल्याबाई ने अपने सम्पूर्ण जीवन में हर दृष्टिकोण से मात्र समाज के लिए ही कार्य किया । धार्मिक चेतना को जागृत करने के लिए पश्चिम में सोमनाथ से लेकर पूर्व में काशी विश्वनाथ तक उन्होंने इस्लाम आक्रमणकारियों द्वारा खंडित हुए मंदिरों के नवीकरण और पुनर्निर्माण में अपना जीवन समर्पित कर दिया । इस कार्य के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र लोकमाता का चिर ऋणी है। इस प्रकार के अनेकों लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए लोकमाता का जीवन समर्पित रहा है ।

•इस संगोष्ठी का उद्देश्य शासन-प्रशासन में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के योगदान तथा नारी सशक्तिकरण की उनकी विरासत तथा उनके द्वारा समाज जीवन के लिए किए गए कार्यों पर गहनतम दृष्टि से प्रकाश डालना है ।

•इस संगोष्ठी का उद्देश्य पुण्यश्लोक माता अहिल्याबाई के जीवन के सभी पक्षों को समाज तक पहुंचाना है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य लोकमाता के द्वारा किये गए समाज कल्याण के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाना भी है । किस प्रकार आपके द्वारा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण व संवर्द्धन किया गया, आज का समाज इससे भी परिचित हो सके । आपके द्वारा किये गये कार्यों को आत्मसात् कर नये तथा विकसित भारत का लक्ष्य सुगम तथा सरल बन सके यह भी इस संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य है ।

संगोष्ठी के विषय/उपविषय

सामाजिक महत्व के विषय -

- अहिल्याबाई होल्कर के सामाजिक सशक्तिकरण की प्रासंगिकता
- अहिल्याबाई होल्कर के समग्र जीवन का मूल्यङ्कन
- अहिल्याबाई होल्कर का नारी सशक्तिकरण को योगादान
- अहिल्याबाई होल्कर द्वारा किए गए सामाजिक परिष्कारों का विश्लेषण
- अहिल्याबाई होल्कर के भारतीय महिला शासन व्यवस्था व्यवस्था की उपादेयता
- अहिल्याबाई होल्कर के साहसिक कार्य
- अहिल्याबाई होलकर द्वारा सामाजिक सरोकारों की प्रासंगिकता

आध्यात्मिक महत्व के विषय -

- अहिल्याबाई होल्कर के प्रशासन में धर्म और आध्यात्म की भूमिका
- अहिल्याबाई होल्कर की भगवद्भक्ति का मूल्यांकन
- अहिल्याबाई होल्कर का मंदिरों को योगदान
- अहिल्याबाई होल्कर की सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति दृष्टि
- अहिल्याबाई होल्कर के जीवन पर ऋषि परम्परा का प्रभाव
- अहिल्याबाई होल्कर के शासन में : धर्म का स्थान
- अहिल्याबाई होल्कर व हिन्दू पुनर्जागरण

आर्थिक महत्व के विषय -

- अहिल्याबाई होल्कर द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल प्रदान करने मेंभूमिका
- अहिल्याबाई होल्कर के राजकोषीय प्रबंधन का महत्व
- अहिल्याबाई होल्कर के प्रशासनिक मूल्य व सिद्धांत
- अहिल्याबाई होल्कर की लोक कल्याणकारी नीतियों की प्रासंगिकता
- अहिल्याबाई होल्कर : तत्कालीन अर्थतन्त्र के साधनों का विवेचन

संगोष्ठी के विषय/उपविषय

समसामयिक महत्व के विषय -

- समसामयिक प्रशासनिक व्यवस्था में अहिल्याबाई होल्कर की प्रासंगिकता ।
- अहिल्याबाई होल्कर द्वारा राष्ट्रीय एकता तथा एकात्मता के लिए किए गये प्रयासों का मूल्याङ्न
- स्वतन्त्रता आन्दोलन पर अहिल्याबाई होल्कर के प्रभाव का विश्लेषण
- सनातन चेतना के अभ्युदय में अहिल्याबाई होल्कर का योगदान
- अहिल्या बाई होल्कर के जीवन पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव
- सांस्कृति पुनरूत्थान में अहिल्याबाई होल्कर की भूमिका

महाविद्यालय के विषय में

वर्ष १९५२ में स्थापित देशबंधु महाविद्यालय दक्षिणी दिल्ली का सबसे पुराना तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाला एक बड़ा सह-शिक्षा संस्थान है । इससंस्थानमें कला, वाणिज्य, भाषा, दर्शन और विज्ञान जैसे पाठ्यक्रमों का अध्ययन तथा अध्यापन होता है । प्रमुख रूप से महाविद्यालय में भाषा/साहित्य, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य और विज्ञान में वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, जैव रसायन तथा भौतिकी एवं गणित जैसे प्रमुख विषयों तथा उनकी शाखाओं में स्नातकोत्तर और स्नातक पाठ्यक्रमों में अध्ययन होता है । प्रतिवर्ष 5000 से अधिक छात्र-छात्राएं यहां अध्ययन करते हैं । वर्तमान में यह महाविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC)द्वारा 'ए++' (A++) श्रेणी तथा NIRF रैंकिग में '16वीं' श्रेणी तथा दिल्लीविश्वविद्यालयमें '8वां' स्थान प्राप्तमहाविद्यालयहै। देशबंधु महाविद्यालय का उन्नत विशाल परिसर, अपने उद्यान, वृक्ष -वनस्पतियों और खेल के मैदान के साथ आने वाली पीढ़ियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक स्वस्थ वातावरण प्रदान करता है । इस महाविद्यालय परिसर में एक प्रशासनिक भवन तथा बी. आर.अम्बेडकर भवन, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विज्ञान भवन, स्वामी विवेकानंद सभागार एवं सभी अत्याधुनिक सुविधाओं सेयुक्तएक समृद्ध "प्रो. ओ.पी. कोहलीपुस्तकालय" भी है । इसके साथ ही विज्ञान भवन का नव विकसित भवन, सुसज्जित प्रयोगशालाएं, छात्रों के लिए व्यायामशाला, जलपानगृह, छायाप्रतिकी सुविधा, वेब एक्सेस सेंटर,चिकित्साकक्ष, बैंकिंग सुविधाओं सहित एक विशाल संगोष्ठी कक्ष तथा एक वनस्पति उद्यान भी है । महाविद्यालय में डॉक्टोरल और पोस्ट डॉक्टोरल अनुसंधान के लिए पूरी तरह कार्यात्मक अनुसंधान प्रयोगशालाएँ भी हैं ।

आयोजक

मुख्य संरक्षक प्रो. डी.एस. चौहान अध्यक्ष, शासी-निकाय, देशबंधु महाविद्यालय	**संरक्षक** प्रो. राजेन्द्र कुमार पाण्डेय (प्राचार्य) देशबंधु महाविद्यालय	**संरक्षक** श्री विनोद शर्मा 'विवेक' प्रमुख, इन्द्रप्रस्थ अध्ययन केन्द्र
परामर्शदाता	प्रो. सुनील कायस्थ (उप-प्राचार्य) देशबंधु महाविद्यालय	
	प्रो. आदित्य सक्सेना समन्वयक,आई. क्यू. ए. सी. देशबंधु महाविद्यालय	
संयोजक	डॉ. विवेक कुमार शुक्ल सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, देशबंधु महाविद्यालय	
सह-संयोजिका	डॉ. मोनिका बजाज सहायक आचार्या, संगणक विज्ञान देशबंधु महाविद्यालय	

महत्वपूर्ण तिथियां (पंजीकरण प्रारम्भ)

- शोध सारांश भेजने की अन्तिम तिथि : जनवरी 30, 2025
- शोध सारांश स्वीकृति की सूचना : फरवरी 07, 2025

प्रकाशन

संगोष्ठी में भेजे गए सभी पूर्ण शोधपत्रों की समीक्षा की जाएगी तथा,समीक्षा के उपरान्त इन्हें प्रकाशित किया जायेगा । सम्पूर्ण शोध पत्र की शब्द सीमा ५००० शब्द है। हिन्दी भाषा के लिए Unicode तथा अंग्रेजी भाषा के लिए Times New Roman फॉन्ट का उपयोग करें ।

आवेदन करें

- शोध सारांश इस ईमेल पर प्रेषित करें - Lokmata@db.du.ac.in
- पंजीकरण प्रक्रिया नीचे दिए गए लिंक का उपयोग करके पूरी की जा सकती है ।
  - https://forms.gle/zhFaqVeZFwRvAMpM7
- पंजीकरण शुल्क:
  - छात्र: स्नातक/परास्नातक- रु. 500/-
  - शोध छात्र – रु.700/-
  - शिक्षाविद/आचार्य: रु. 1000/-
  - अन्य: रु.1000/-
- पंजीकरण तथा शुल्क का भुगतान निम्नलिखित विवरण के साथ ऑनलाइन माध्यम से किया जा सकेगा:
  - खाताधारक का नाम:
    "Lokmata Devi Ahilyabai Holkar National Conference"
  - बैंक का नाम: Punjab & Sind Bank
  - खाता संख्या: 09031100000382
  - आईएफएससी कोड:PSIB0000903

सम्पर्क सूत्र

व्हाट्सएप ग्रुप लिंक

https://chat.whatsapp.com/B5vYVbsJBXrE4jUqbioQIy

ईमेल : lokmata@db.du.ac.in